वर्ष:9 | अंक:107 | नवम्बर, 2026

मूल्य: ₹5



पू. कैलाश जी 'मानव'

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Nar Seva Narayan Seva

सेवा पाती

संवेदना के सहारे फिर चल पड़ी गौ माता

संवेदना जब संकल्प बनती है, तो सेवा की राह केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रहती, वह मूक प्राणियों की पीड़ा भी समझती है।


NARAYAN
LIMBS & CALIPERS
can transform lives
फिर बढ़े
नन्हे कदम
Donate via UPI
narayanseva@sbi
आइए, इन कदमों को
मंज़िल तक पहुँचाएँ।"
₹ 10,000/-



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

अनुक्रमणिका

मूल्य ▸ 5 रू. वर्ष ▸9 अंक ▸107
मुद्रण तारीख ▸1 नवम्बर, 2026 कुल पृष्ठ ▸ 24

04 जीवन को संस्कारों से सींचती रामायण और सेवा की संवेदना

06 शुभ के कदम उम्मीद की नई उड़ान

08 संवेदना ने थामे कदम, फिर चल पड़ी गोमाता

10 पैरों की जन्मजात विकृति से मुक्त हुई नैना

11 कर्म पर ही वर्तमान और भविष्य निर्भर

12 700 दिव्यांगजन हुए आत्मनिर्भर

14 नारायण सेवा संस्थान नहीं मंदिर है

16 उन्नत तकनीक से खड़े हुए 634 दिव्यांगजन

18 501 दिव्यांग कन्याओं का महापूजन

सम्पादक मंडल

मार्गदर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल। सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

नारायण सेवा संस्थान , वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी,
सेवातीर्थ, सेंट्रल एरिया, उदयपुर – 313002, राजस्थान
फोन नं. +91-294-6622222 वाट्सऐप: +91-70235 09999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 नवम्बर, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित।
मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये

जीवन को संस्कारों से सींचती

देशभर से आए दिव्यांग बंधु-बहनों से 'अपनों से अपनी बात' कार्यक्रम के माध्यम से जुड़कर संस्कार चैनल पर लाइव संवाद करने का अवसर मिला। ईश्वर की कृपा से इस दौरान रामायण के विविध प्रसंगों के माध्यम से जीवन जीने की कला, रिश्तों की गरिमा, त्याग, सेवा, समर्पण और क्षमा के ऐसे संदेश साझा किए, जिन्हें केवल सुनना ही नहीं, बल्कि अपने जीवन में उतारना भी आवश्यक है।

मेरे लिए रामायण केवल अतीत की धार्मिक गाथा नहीं, बल्कि वर्तमान का जीवंत दर्शन है। इसके पात्र हमें बताते हैं कि मनुष्य की महानता उसके पद, प्रतिष्ठा या अधिकारों से नहीं, बल्कि उसके आचरण और संवेदनशीलता से आंकी जाती है। भरत ने राजसिंहासन ठुकराकर श्रीराम की चरण पादुकाओं को प्रतिष्ठित किया। शत्रुघ्न ने बिना किसी यश की आकांक्षा के अपने दायित्व निभाए। अशोक वाटिका में त्रिजटा और सरमा ने विपरीत परिस्थितियों में भी मानवीय संवेदना का परिचय दिया। निषादराज गुह और महर्षि भारद्वाज की आत्मीयता ने समझाया कि रिश्ते रक्त से नहीं, भावनाओं से बनते हैं। वहीं माता कैकेयी के प्रति श्रीराम की क्षमाशीलता ने सिखाया कि क्षमा दुर्बलता नहीं, बल्कि चरित्र की सबसे बड़ी शक्ति है।

दीपावली के अवसर पर भी मैंने पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से धन से पहले धर्म, चरित्र और विवेक को जीवन में स्थान देने की बात रखी। प्रह्लाद की कथा ने शील और सदाचार का महत्व समझाया, लक्ष्मी-गणेश पूजन ने धन के साथ बुद्धि और विवेक की अनिवार्यता बताई। भगवान धन्वंतरि के प्राकट्य ने निरोगी काया का महत्व बताया, तो श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर की कैद से मुक्तकन्याओं को सम्मान



रामायण और सेवा की संवेदना

-सेवक प्रशांत भैया जी

देने के प्रसंग ने पीड़ितों को अपनाने की प्रेरणा दी। यम दीपदान की कथा ने अपनों के साथ खड़े रहने और किसी के जीवन से अकेलेपन का अंधकार मिटाने का संदेश दिया।

गौवत्स द्वादशी पर राजा दिलीप और नंदिनी की कथा के माध्यम से जीवों के प्रति समर्पण तथा पुण्यकोटि गाय के प्रसंग से सत्य और वचनबद्धता की महत्ता साझा की। कामधेनु और पृथ्वी से जुड़े प्रसंगों ने प्रकृति संरक्षण के प्रति हमारे दायित्व का स्मरण कराया। इन सभी कथाओं का सार मेरे लिए यही है कि जीवन की सार्थकता केवल स्वयं के लिए जीने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में आशा का दीप जलाने में है। यही भाव नारायण सेवा संस्थान की सेवा गतिविधियों का आधार भी है। जब किसी दिव्यांग को उपचार मिलता है, कृत्रिम अंगों के सहारे उसके कदम फिर उठते हैं, शिक्षा से आत्मविश्वास जागता है और आत्मनिर्भरता से जीवन को नई दिशा मिलती है, तब सेवा का वास्तविक अर्थ साकार होता है। आज जब समाज पद, प्रतिष्ठा और भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में संवेदनाओं से दूर होता जा रहा है, तब ऐसे संवाद आत्मावलोकन का अवसर देते हैं। रामायण के आदर्श, दीपावली का उजास और गौसेवा की करुणा हमें याद दिलाते हैं कि धन से घर समृद्ध होता है, संस्कारों से परिवार और संवेदना से समाज समृद्ध बनता है। मेरा विश्वास है कि दूसरों के दुःख में सहभागी होना और किसी के जीवन में खुशियों का उजाला भरना ही मनुष्यता की सबसे सुंदर पहचान है।



शुभ के कदम उम्मीद की नई उड़ान

जिस बच्चे के कदम कभी सामान्य रूप से आगे नहीं बढ़ पाते थे, आज दौड़ते हुए परिवार के लिए खुशियों की वजह बन गए है। नारायण सेवा संस्थान के चिकित्सकों और टीम के प्रयासों ने शुभ को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की नई राह दी है।

उत्तर प्रदेश के खीरी जिले के छोटे से गाँव अलीगंज निवासी सोनू शर्मा के घर तीन साल पहले बेटे का जन्म हुआ तो पूरे परिवार में खुशियाँ छा गई। बेटे का नाम शुभ रखा गया। लेकिन कुछ समय बाद माता-पिता को पता चला कि उसके दोनों पैर अंदर और नीचे की ओर मुड़े हुए हैं। वह दूसरे बच्चों की तरह सामान्य रूप से खड़ा नहीं हो पाता था। डॉक्टरों को दिखाने पर उन्होंने बताया कि शुभ जन्मजात क्लबफुट की समस्या से पीड़ित है। बेटे की स्थिति देखकर माता-पिता चिंतित रहने लगे। उन्हें उसके भविष्य की चिंता सताने लगी कि क्या शुभ कभी अपने पैरों पर चल और दौड़ पाएगा? इसी बीच उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। सोनू शर्मा 17 सितंबर 2026 को तीन वर्षीय शुभ को लेकर संस्थान पहुँचे। यहाँ डॉ. विशाल और उनकी टीम ने जाँच के बाद उपचार शुरू किया। 22 सितंबर को शुभ का ऑपरेशन किया गया, जो सफल रहा। चिकित्सकों ने उसके पैरों पर प्लास्टर चढ़ाया और आवश्यक उपचार के साथ फॉलोअप की प्रक्रिया शुरू की। 25 सितंबर को उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। इसके बाद 25 अक्टूबर को शुभ को दोबारा जाँच और आगे के उपचार के लिए बुलाया गया। ऑपरेशन, प्लास्टर बदलने, फॉलोअप और फिजियोथेरेपी के निरंतर उपचार से शुभ के पैरों में सुधार हुआ। आज शुभ अपने परिवार के साथ खुश है। अब वह चलने के साथ दौड़ भी रहा है।

नारायण लिम्ब से युसूफ के कदमों को मिली चाल

जन्म से छोटे पैर की परेशानी हुई दूर, संस्थान के सहयोग से लौटी परिवार में खुशियाँ

मुंबई,महाराष्ट्र के नालासोपारा पश्चिम निवासी मो. तारिक के पाँच वर्षीय बेटे युसूफ के जीवन में नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से नई उम्मीद जगी है। तारिक आटा चक्की चलाकर परिवार का पालन-पोषण करते हैं। परिवार मूल रूप से उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ का निवासी है। युसूफ की 11 वर्षीय बड़ी बहन भी है। जन्म से ही युसूफ का दायाँ पैर बाएँ पैर की तुलना में छोटा था। बेटे की इस परेशानी को देखकर माता-पिता चिंतित रहते थे। उन्होंने कई जगह संपर्क कर उपचार की संभावनाएँ तलाशीं, लेकिन संतोषजनक समाधान नहीं मिल पाया। इसी दौरान उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान की निःशुल्क सेवाओं के बारे में जानकारी मिली।

परिवार युसूफ को लेकर संस्थान पहुँचा। यहाँ चिकित्सकीय एवं तकनीकी टीम ने उसके पैरों की जाँच कर आवश्यक माप लिया। युसूफ के लिए विशेष नारायण लिम्ब तैयार कर पहनाया गया। विशेषज्ञों ने उसे कृत्रिम अंग के साथ चलने-फिरने का अभ्यास भी कराया।

निरंतर अभ्यास से युसूफ ने कुछ ही समय में नारायण लिम्ब के सहारे चलना सीख लिया। अब वह सहजता और आत्मविश्वास के साथ चल रहा है। बेटे को अपने पैरों पर चलते देखकर माता-पिता बेहद खुश हैं। युसूफ के बढ़ते कदम परिवार के लिए नई खुशियों और उम्मीदों का आधार बन गए हैं। नारायण सेवा संस्थान की निःशुल्क सेवा एवं तकनीकी सहयोग ने नन्हे युसूफ को बेहतर भविष्य की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है।

संवेदना ने थामे कदम, फिर चल पड़ी गौ माता

संस्थान ने नारायण लिम्ब लगाकर जीव दया के संकल्प को दी नई दिशा

संवेदना जब संकल्प बनती है, तो सेवा की राह केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रहती, वह मूक प्राणियों की पीड़ा भी समझती है।

नारायण सेवा संस्थान ने करुणा का परिचय देते हुए राजसमंद जिले के घोड़ाघाटी में दुर्घटना में अगला बायां पैर गंवा चुकी एक गौ माता को मॉड्यूलर कृत्रिम अंग लगाकर फिर से चलने का संबल दिया।

गौ माता की असहाय स्थिति की जानकारी संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया को मिली तो उन्होंने तत्काल प्रोस्थेटिक्स एंड ऑर्थोटिक्स (पीएंडओ) विभाग की विशेषज्ञ टीम को मौके पर भेजा। टीम ने उसकी शारीरिक संरचना और जरूरतों का बारीकी से आकलन कर माप लिए। इसके बाद विभागाध्यक्ष डॉ. मानस रंजन साहू के नेतृत्व में विशेष मॉड्यूलर नारायण कृत्रिम अंग तैयार किया गया।

विशेषज्ञ टीम ने घोड़ाघाटी पहुंचकर कृत्रिम पैर का फिटमेंट किया। फिर वह भावुक कर देने वाला क्षण आया, जब गौ माता को उसके सहारे खड़ा किया गया। उसने धीरे-धीरे कदम बढ़ाए और चलने का प्रयास सफल रहा। उसकी बदली हुई चाल देखकर उपस्थित लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे। यह केवल तकनीक की सफलता नहीं, बल्कि संवेदना और जीव दया की जीत थी।

यह पहल बताती है कि तकनीक की सार्थकता केवल नए आविष्कारों में नहीं, बल्कि किसी की पीड़ा कम करने में है। आखिर करुणा की कोई सीमा नहीं होती और सच्ची सेवा वही है, जिसमें हर जीव के जीवन का सम्मान हो।





इस उपलब्धि पर प्रशांत भैया ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, दुर्घटना में दिव्यांग हुए व्यक्ति अपनी पीड़ा शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं, लेकिन किसी मूक प्राणी के दर्द को समझने के लिए संवेदनशील हृदय चाहिए। गौ माता अपनी तकलीफ बता नहीं सकती थी, लेकिन उसकी पीड़ा को महसूस करना हमारा दायित्व था। हमें खुशी है कि संस्थान की तकनीकी दक्षता और सेवा भावना के माध्यम से उसे फिर से अपने पैरों पर खड़े होकर चलने में मदद मिल सकी।

नारायण सेवा संस्थान लंबे समय से दिव्यांगजनों को आधुनिक कृत्रिम अंगों और सहायक उपकरणों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। घोड़ाघाटी की गौ माता के लिए किया गया यह प्रयास दर्शाता है कि तकनीक का वास्तविक उद्देश्य केवल सुविधा जुटाना नहीं, बल्कि पीड़ा कम करना और जीवन को बेहतर बनाना भी है।

जिसकी पीड़ा शब्दों में बयां नहीं हो सकती उसकी बेबसी को समझकर सस्थान ने 1.50 लाख रूपये का कृत्रिम पैर बनाया...



पैरों की जन्मजात विकृति से मुक्त हुई नैना

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के दुनौली स्थित पुरी दुबे गांव की नैना (7) मुनिराज - मंजू देवी की इकलौती संतान है। जन्म से ही उसके दोनों पैर पंजों की ओर मुड़े हुए थे, जिससे उसे चलने-फिरने में परेशानी होती थी। माता-पिता ने गांव और आसपास कई जगह उपचार करवाया, लेकिन राहत नहीं मिली। मजदूरी पर निर्भर परिवार के लिए उपचार कराना भी आसान नहीं था, फिर भी हर संभव प्रयास जारी रहा। परिवार का सपना था कि नैना भी दूसरे बच्चों की तरह चले, खेले और बचपन खुलकर जी सके।

पिता मुनिराज को सोशल मीडिया के माध्यम से उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिलने पर वे नैना को लेकर संस्थान पहुंचे। नवंबर 2024 में चिकित्सकीय टीम ने स्थिति के अनुसार उपचार की प्रक्रिया आरम्भ की। 2 बड़े ऑपरेशन - विजिंग और चिकित्सकीय देखभाल के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए नैना ने धीरे-धीरे चलना शुरू किया। इस दौरान माता-पिता ने भी धैर्य और हिम्मत बनाए रखी। संस्थान में मिले नि:शुल्क उपचार से परिवार को बड़ी राहत मिली।

13 अक्टूबर 2026 को उपचार का फॉलोअप किया गया। नैना दौड़ने, खेलने और स्कूल जाने के लिए तैयार थी। माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मुनिराज और मंजू देवी ने नैना के उपचार के लिए नारायण सेवा संस्थान और चिकित्सकों का आभार जताया। सोशल मीडिया से मिली संस्थान की जानकारी ने उनके परिवार को उपचार की नई राह दिखाई और बेटी के भविष्य के प्रति उम्मीद जगाई।

नैना की कहानी माता-पिता के धैर्य और समय पर उपचार मिलने से जीवन में आने वाले सकारात्मक बदलाव की प्रेरक मिसाल है।



कर्म पर ही वर्तमान और भविष्य निर्भर

-मुनिश्री आदित्य सागर जी

व्यक्ति को किसी अन्य विषय की जानकारी हो या न हो, लेकिन उसे अपने कर्मों के बारे में अवश्य पता होना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति का वर्तमान और भविष्य उसके कर्मों पर ही निर्भर करता है। यह विचार 9 अक्टूबर को श्रुतसंवेगी महाश्रमण मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ने नारायण सेवा संस्थान के नवनिर्मित वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी में संचालित सेवा प्रकल्पों के अवलोकन के बाद अपने मंगल प्रवचन में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति के कर्म ही उसे सफलता के शिखर तक पहुंचाते भी हैं और उसकी असफलता का कारण भी बनते हैं। कर्मों के आधार पर ही उसके अगले जन्म का निर्धारण होता है। उन्होंने कहा कि धर्माचरण में यदि परमार्थ का भाव नहीं है, तो वह धर्म सार्थक नहीं हो सकता। धर्म के साथ समाज और राष्ट्र हित चिंतन भी आवश्यक है। व्यक्ति को केवल अपने सुख के लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों की खुशियों के लिए भी कार्य करना चाहिए। जब व्यक्ति दूसरों को प्रसन्न रखने और उनके जीवन में खुशियां लाने का प्रयास करता है, तो उसका अपना जीवन भी आनंद से भर जाता है।

मुनिश्री ने मानवता की सेवा में नारायण सेवा संस्थान के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान के सेवा कार्यों को देखकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार इसके प्रकल्पों को आगे बढ़ाने में योगदान देना चाहिए।

सेवा प्रकल्पों का अवलोकन - इससे पूर्व संस्थान के मुख्य द्वार पर संस्थापक चेयरमैन पद्मश्री कैलाश जी 'मानव', सह-संस्थापिका श्रीमती कमला देवीजी, अध्यक्ष सेवक श्री प्रशांत भैया जी और निदेशक श्रीमती वंदना जी ने नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के स्वागत गीत और नवकार मंत्रोच्चार के बीच मुनिश्री की पाद प्रक्षालन से अगवानी की। इस अवसर पर मुनिश्री के साथ विहार कर रहे मुनिश्री अप्रमित सागर, श्री सहज सागर एवं श्रेयस सागर जी का भी अभिनंदन किया गया। मुनिश्री एवं ससंघ ने दिव्यांगजनों के लिए संचालित कंप्यूटर, मोबाइल, सिलाई तथा आर्ट एंड क्राफ्ट के नि:शुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों का अवलोकन किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से संवाद कर उनके कौशल विकास और भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी ली। मुनिश्री ने देश के विभिन्न प्रांतों से सुधारात्मक शल्य चिकित्सा के लिए आए दिव्यांगजनों से वार्ड में जाकर मुलाकात की और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने हादसों में अपने हाथ-पैर गंवा चुके दिव्यांगजनों से भी आत्मीय संवाद किया। साथ ही, उनके लिए जापानी और जर्मन तकनीक से तैयार किए जा रहे मॉड्यूलर कृत्रिम अंगों के बारे में जानकारी प्राप्त की। संस्थान परिवार ने मुनिश्री को अभिनंदन पत्र अर्पित कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। संयोजन महिम जैन ने किया।

700 दिव्यांगजनों को

अमृतसर, बरेली और अहमदाबाद में विशाल नि:शुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सार्थ जांच-चयन एवं नारायण लिम्ब मेजरमेंट शिविर लगाए गए। जिसमें 700 से अधिक दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व कैलीपर उपलब्ध कराने के लिए विशेषज्ञों द्वारा माप लिया गया।



अमृतसर: अमृतसर के महाराजा फॉर्म्स, मजीठा-वेरका बाईपास रोड पर 4 अक्टूबर को विशाल नि:शुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सार्थ जांच-चयन एवं नारायण लिम्ब मेजरमेंट कैंप किया गया। शिविर में 300 से अधिक दिव्यांगजन पहुंचे। संस्थान टीम ने 240 दिव्यांगजनों के नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब और 70 के कैलिपर्स के लिए माप लिए, जबकि 18 दिव्यांगजनों का नि:शुल्क शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया गया।

मुख्य अतिथि पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री ओम प्रकाश सोनी एवं अध्यक्षता कर रहे क्षेत्रीय सांसद श्री गुरजीत सिंह औजला सहित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कैम्प का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सीनियर डिप्टी मेयर श्रीमती प्रियंका शर्मा, पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. राजकुमार वेरका, चेयरमैन स्पोर्ट्स सेल पंजाब श्री प्रमोद कुमार भाटिया, पूर्व विधायक श्री सुनील दात्री, श्री अरुण जैन, श्री गुलशन बजाज, श्रीमती ललित कुमारी, श्री प्रेम प्रकाश हरलालका, श्री अनिल जी गर्ग मंचासीन थे। संस्थान ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा, शिविर प्रभारी हरि प्रसाद लड्ढा एवं कैथल आश्रम प्रभारी डॉ. मोहित वर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया।

बरेली: नारायण सेवा संस्थान एवं शिवम वेलफेयर सोसायटी, महानगर कॉलोनी, बरेली के संयुक्त तत्वावधान में 11 अक्टूबर को स्पर्श होटल एंड रिजॉर्ट में विशाल नि:शुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सा जांच-चयन एवं नारायण लिम्ब मेजरमेंट कैंप आयोजित किया गया। शिविर में 404 से अधिक दिव्यांगजन पहुंचे। टीम ने परीक्षण के बाद 141 दिव्यांगजनों के कृत्रिम अंग तथा 162 के कैलिपर्स के लिए माप लिए, जबकि 28 दिव्यांगजनों को नि:शुल्क शल्य चिकित्सा के लिए चयनित किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के वन एवं पर्यावरण मंत्री डॉ. अरुण कुमार सक्सेना, शिवम वेलफेयर

आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बढ़े कदम

सोसायटी की अध्यक्ष डॉ. रंजना गुप्ता तथा विशिष्ट अतिथि श्री अनुपम गोयल, समाजसेवी श्री प्रदीप गुप्ता, श्री राजीव गुप्ता एवं शाखा प्रेरक श्री कुंवरपाल सिंह रहे।

अहमदाबाद - इंगरसोल रैंड के सौजन्य से गुजरात यूनिवर्सिटी के अटल कलाम कैंपस, अहमदाबाद में 14 अक्टूबर को नि:शुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सार्थ जांच-चयन एवं नारायण लिम्ब मेजरमेंट कैंप आयोजित किया गया। जिसमें 73 दिव्यांगजनों के नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब और 14 के कैलिपर्स के लिए माप लिए, तथा 7 दिव्यांगजनों का नि:शुल्क शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया।

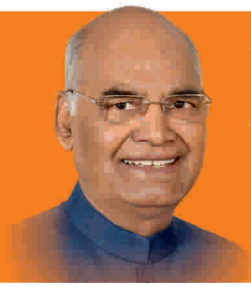
शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि इंगरसोल रैंड के चेयरमैन, प्रेसिडेंट एवं सीईओ विसेन्ट रेनयल तथा अध्यक्षता कर रहे कंपनी के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट एवं चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर विक्रम किनी, संस्थान निदेशक श्रीमती पलक अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस अवसर पर इंगरसोल रैंड की सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, कॉर्पोरेट डेवलपमेंट एलिजाबेथ हेपडींग, वाइस प्रेसिडेंट, एंटरप्राइज स्टोरेज एवं ग्रोथ इनिशिएटिव जोनाथन लक्स, बिजनेस डेवलपमेंट लीडर पीटर एंज, इंगरसोल रैंड इंडिया लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर सुनील खण्डुजा, एचआर हेड महादेव पटेल, सीएसआर हेड अदिति मेहरोत्रा, प्लांट हेड विश्वास देशमुख, प्रोक्योरमेंट मैनेजर नागराज पड़की तथा समाजसेवी वल्लभ भाई धनानी, आशुतोष भाई पंडित, किरीट भाई शाह, चिन्नू भाई पटेल एवं सतीश भाई बविस्कर सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।









नारायण सेवा संस्थान नहीं मंदिर है

श्री रामनाथ कोविंद जी
महामहिम 14वें राष्ट्रपति



आज यहां आकर लगभग एक घंटे से जो दृश्य देख रहा हूं और जिन दिव्यांग भाई-बहनों से मिला हूं, उनकी पीड़ा और जीवन में लौटती मुस्कान देखकर लगता है कि संस्थान के कार्यों की प्रशंसा में शब्दों की आवश्यकता ही नहीं है। इसका सेवा कार्य स्वयं अपनी कहानी कह रहा है।

हमारे शास्त्रों में मनुष्य जीवन को चौरासी लाख योनियों के बाद मिलने वाला दुर्लभ अवसर बताया गया है। मनुष्य ईश्वर की सबसे सुंदर कृति है। लेकिन दुर्घटना, बीमारी अथवा किसी अन्य कारण से जब किसी का हाथ, पैर या आंखों की रोशनी चली जाती है, तो केवल उसका जीवन नहीं बदलता, पूरे परिवार की खुशियां प्रभावित होती हैं। जिस घर में बच्चे के जन्म पर उत्सव मनाया गया था, उसी घर में उसकी असहायता देखकर माता-पिता और परिजनों की मुस्कान भी खो जाती है। ऐसे में जब किसी दिव्यांग को कृत्रिम अंग मिलता है, वह फिर अपने पैरों पर खड़ा होता है और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता है, तो यह केवल एक अंग मिलने की घटना नहीं, बल्कि पूरे परिवार को नई जिंदगी मिलने जैसा है। ईश्वर ने हमें स्वस्थ शरीर दिया, यह उसकी कृपा है और किसी जरूरतमंद को फिर से चलने की शक्ति मिलना भी उसी कृपा का विस्तार है। नारायण सेवा संस्थान इस कृपा का माध्यम बन रहा है।

मैं संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव जी से मिल चुका हूं और उदयपुर स्थित संस्थान जाने का सौभाग्य भी मिला है। आज प्रशांत जी और वंदना जी को देखकर उस परिवार की सेवा परंपरा का स्मरण हो रहा है। धन तो बहुत लोगों के पास होता है, लेकिन अपने सामर्थ्य को दूसरों के जीवन में खुशियां लौटाने के लिए समर्पित कर देना बड़ी बात है।



कभी बेबस थे कदम-आज 432 चले अपने कदम



लखनऊ शिविरः सेवा से लौटी 432 दिव्यांगजनों के जीवन में नई उम्मीद

नारायण सेवा संस्थान द्वारा आयोजित लखनऊ शिविर में 432 दिव्यांगजनों को 549 नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब एवं कैलिपर्स का फिटमेंट किया गया। इस शिविर का उद्घाटन महामहिम 14वें राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने किया। उन्होंने लाभान्वित दिव्यांगजनों से आत्मीय संवाद कर उनके अनुभव जाने।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्री श्री असीम अरुण जी ने सेवा कार्यों के लिए लखनऊ में संस्थान को निःशुल्क भवन अथवा भूखण्ड देने की घोषणा की। इस मौके पर संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशांत अग्रवाल, निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी एवं निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा, संरक्षक श्री सत्यभूषण जैन, चिकित्सक दल, तकनीकी विशेषज्ञ, दानदाता, सेवाभावी कार्यकर्ता एवं अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

मैं प्रशांत जी से कहना चाहूंगा कि आपने अपनी संस्था का नाम नारायण सेवा संस्थान रखा है, लेकिन मेरे मन में इसे नारायण सेवा मंदिर कहने का भाव आता है। क्योंकि यहां नर की सेवा नारायण के रूप में होती है। यहां पीड़ित मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। हम मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन करते हैं और आशीर्वाद लेकर लौटते हैं। लेकिन मंदिर के बाहर किसी भूखे, असहाय या दिव्यांग व्यक्ति की मदद करने पर उसके चेहरे पर जो मुस्कान आती है और हृदय से जो आशीर्वाद निकलता है, वह भी किसी पूजा से कम नहीं। कई बार जरूरतमंद के चेहरे पर लौटी मुस्कान ही हमें ईश्वर के सबसे निकट होने का अनुभव कराती है। मुझे यहां रायबरेली से आए एक लाभार्थी से बातचीत याद आती है। उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने बताया कि आर्थिक संसाधन नहीं होने के कारण वे उदयपुर नहीं पहुंच पा रहे थे। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि यदि ईश्वर ने आपको दोबारा चलने की शक्ति देने का मार्ग बनाया है, तो साधन भी अवश्य उपलब्ध होंगे।

मैंने उनसे कहा था कि उदयपुर केवल एक शहर नहीं है। वहां नारायण सेवा संस्थान एक मंदिर के समान है, जहां आपको भगवान के रूप में इंसान मिलेंगे और सेवा करने वाले लोग उस मंदिर के सच्चे पुजारी हैं। मेरी इच्छा है कि मुझे पुनः उदयपुर जाकर इस सेवा मंदिर के दर्शन करने का अवसर मिले। मैं आप सभी से आग्रह करना चाहता हूं कि यदि आपके आसपास कोई ऐसा दिव्यांग भाई या बहन मिले, जिसे उपचार अथवा कृत्रिम अंग की आवश्यकता हो, तो उसे नारायण सेवा संस्थान का पता अवश्य बताएं। आज यहां जिन भाई-बहनों को नई जिंदगी मिली है, मैं उनके स्वस्थ, सुखद और आत्मनिर्भर भविष्य की कामना करता हूं। यह नई जिंदगी आपके अधूरे सपनों को भी नई उड़ान दे। माता-पिता की सेवा, बच्चों का भविष्य संवारने और अपने गांव-समाज के लिए कुछ करने के जो सपने आपने देखे थे, अब उन्हें पूरा करने का अवसर आपके सामने है। संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव जी, अध्यक्ष श्री प्रशांत अग्रवाल जी और उनकी पूरी टीम मानवता की जो सेवा कर रही है, उसके लिए मैं हृदय से साधुवाद देता हूं। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।



उन्नत तकनीक से खड़े हुए 634 दिव्यांगजन

बेल्लारी - नारायण सेवा संस्थान के बेल्लारी (कर्नाटक) में 25 अक्टूबर को आयोजित शिविर में 634 दिव्यांगजनों को 687 नारायण मॉड्यूलर कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स फिट किए गए। हल्के, टिकाऊ और आरामदायक कृत्रिम अंग पाकर लाभार्थियों के चेहरों पर खुशी झलक उठी। फिटमेंट के बाद मिरर बार पर चलने के अभ्यास ने उनके आत्मविश्वास को मजबूती दी।

मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री बी. श्रीरामुलु रहे। अध्यक्षता पुलिस अधीक्षक डॉ. सुमन पेनकर ने की। महापौर पी. गादेप्पा परम विशिष्ट अतिथि तथा पूर्व विधायक श्री सोम शेखर रेड्डी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन रहे।

बी. श्रीरामुलु ने कहा कि ऐसे सेवा कार्य दिव्यांगजन को आत्मनिर्भर बनाने के साथ उनके जीवन में आत्मविश्वास और स्वाभिमान बढ़ाते हैं। डॉ. सुमन पेनकर ने संस्थान के प्रयासों को मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रेरक उदाहरण बताया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। कार्यक्रम में डीवाईएसपी श्री प्रसाद गोखले, सन्मार्ग गेलेयारा बालाग फ्रेंडशिप ग्रुप के अध्यक्ष एच. लक्ष्मीकांत रेड्डी, जीएसटी कमिश्नर श्री वेंकटेश मूर्ति, आरटीओ श्री पंपापाती, जैन समाज के अध्यक्ष श्री सूरजमल बागरेचा, श्री चंद्रशेखर आचार्य, श्री जगदीश गोड़ा, श्री हनुमंत रेड्डी, श्री रघुराम राव, श्री अशोक भंडारी, उद्योगपति श्रीमती मंजुला मोदी और श्री सत्यनारायण सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। शिविर का संयोजन श्री महिम जैन ने जबकि आभार शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लड्ढा ने व्यक्त किया।





कॉरपोरेट साझेदारी से सेवा और सामाजिक बदलाव को मिलेगी गति

-प्रशांत अग्रवाल

नारायण सेवा संस्थान एवं सीएसआर बॉक्स के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली में 13वें फॉर्मरली इंडिया CSR एवं ESG समिट का समापन, 2,000 कॉरपोरेट प्रतिनिधियों और एनजीओ भागीदारों की सहभागिता

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को जनकल्याण और समावेशी विकास से जोड़ने के उद्देश्य से 29 अक्टूबर को आयोजित 13वें फॉर्मरली इंडिया CSR एवं ESG समिट का समापन केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान के मुख्य आतिथ्य में हुआ। नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर एवं सीएसआर बॉक्स के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय समिट में करीब 2,000 कॉरपोरेट प्रतिनिधियों और एनजीओ भागीदारों ने भाग लिया। समापन समारोह में नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने संस्थान की सेवा यात्रा, दिव्यांगजनों की शल्य चिकित्सा, कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स, पुनर्वास और आत्मनिर्भरता से जुड़े प्रकल्पों की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि सामाजिक संस्थाओं के जमीनी अनुभव और कॉरपोरेट जगत के संसाधनों का समन्वय जरूरतमंदों के जीवन में स्थायी बदलाव ला सकता है। नारायण सेवा संस्थान इसी संकल्प के साथ दिव्यांगजनों को उपचार, संबल, आत्मनिर्भरता के अवसर उपलब्ध कराने में जुटा है।

मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कॉरपोरेट जगत से ग्रामीण विकास में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया तथा उन्होंने नारायण सेवा संस्थान की सेवाओं की सराहना की। समारोह में राज्यसभा सांसद डॉ. अजीत माधवराव घोपचड़े तथा आईआईटी मद्रास के डीन (एलुमनी एवं कॉरपोरेट रिलेशंस) प्रो. अश्विन महालिंगम विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, चिकित्सा और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को 'डूइंग गुड फॉर भारत अवार्ड' से सम्मानित किया गया। केंद्रीय मंत्री चौहान, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल एवं अन्य अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किए। समिट में CSR एवं ESG के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के साथ कॉरपोरेट जगत और सामाजिक संगठनों के बीच साझेदारी को मजबूत बनाने पर जोर दिया गया। आयोजन ने सेवा, सामाजिक समावेशन और सतत विकास के साझा प्रयासों को आगे बढ़ाने का मंच प्रदान किया।

501 दिव्यांग कन्याओं का महापूजन

संस्थान के तत्वावधान में 19 अक्टूबर (दुर्गाष्टमी) को 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' सेवातीर्थ में 501 दिव्यांग कन्याओं का महापूजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव से संपन्न हुआ। उदयपुर सांसद डॉ. मन्नालाल रावत मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कन्याओं की आरती कर नैवेद्य अर्पित किया तथा सर्जरी से लाभान्वित बच्चियों से आत्मीय संवाद कर उनके स्वास्थ्य एवं जीवन-लक्ष्यों की जानकारी ली। रावत ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिव्यांगजनों को सम्मानजनक पहचान देकर उनके सशक्तीकरण के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं। नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क मानव सेवा एवं देशभर में सेवा शिविरों के माध्यम से मेवाड़ का गौरव बढ़ा रहा है।



नारायण सेवा ने बढ़ाया

संस्थान का प्रयास दिव्यांगजनों के जीवन में आशा और आत्मविश्वास जगाने वाला अनुकरणीय कार्य है। संस्थापक गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव' एवं निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने सांसद महोदय को संस्थान की सेवाओं की जानकारी देते हुए बताया कि उपचार, सर्जरी, कृत्रिम अंग, कैलिपर्स एवं पुनर्वास के माध्यम से प्रतिदिन अनेक जरूरतमंद लाभान्वित हो रहे हैं।

अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि संस्थान वर्षों से दिव्यांग कन्याओं का मां दुर्गा स्वरूप पूजन करता आ रहा है। यह महापूजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सम्मान, समानता, अपनत्व एवं सामाजिक स्वीकार्यता का संदेश देने वाला सेवा यज्ञ है।



मेवाड़ का मान : रावत



एक कुर्सी में समाया संवेदना का संसार

संस्थान रोगी के साथ उसके परिजनों के सुकून और सम्मान का भी रखता है ध्यान

अस्पताल में पीड़ा केवल रोगी के हिस्से नहीं आती, उसके साथ आए परिजन भी चिंता, प्रतीक्षा और अनिद्रा के लंबे पहर जीते हैं। अपनों के उपचार की आस में वे अपनी थकान और आराम को जैसे भुला ही देते हैं। ऐसे में यदि कोई उनके विश्राम की चिंता भी करे, तो वह सुविधा नहीं, संवेदना का विस्तार बन जाती है।

नारायण सेवा संस्थान के सेवातीर्थ स्थित वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी में इसी मानवीय सोच को साकार किया गया है। यहां प्रत्येक रोगी के बेड के साथ विशेष अटेंडेंट चेयर रखी गई है। दिन में बैठने के लिए उपयोगी यह चेयर रात होते ही बिस्तर का रूप ले लेती है, ताकि रोगी की देखभाल में जुटे परिजन भी कुछ पल सुकून से विश्राम कर सकें और सम्मानपूर्वक नींद ले सकें।

यह व्यवस्था आकार में भले छोटी हो, लेकिन इसके पीछे छिपी संवेदना का विस्तार बहुत बड़ा है। किसी मां की ममता, पत्नी की प्रतीक्षा, बेटे की सेवा और परिजनों की अनकही थकान को समझने वाली यह पहल बताती है कि संस्थान के लिए रोगी ही नहीं, उसकी पीड़ा से जुड़े अपने लोग भी महत्वपूर्ण हैं। नि:शुल्क उपचार और सेवा के लिए समर्पित नारायण सेवा संस्थान ने यहां चिकित्सा के साथ मानवीय गरिमा को भी स्थान दिया है। आखिरकार, सेवा का अर्थ केवल घावों का उपचार करना नहीं, बल्कि उन आंखों की थकान पढ़ना भी है, जो अपनों के स्वस्थ होने की प्रतीक्षा में रातभर जागती हैं। रोगी के उपचार से आगे बढ़कर उसके अपनों के सुकून की चिंता करना ही सेवा को संवेदना और संवेदना को संस्कार बनाता है।



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

48वां दिव्यांग एवं निर्धन सामुहिक विवाह समारोह

दिनांकः 27 दिसम्बर 2026, रविवार | **स्थानः** वृंदावन गार्डन कुरुक्षेत्र रोड़, कैथल ,हरियाणा



आपश्री सादर आमंत्रित हैं।

साथ मिलकर रचें एक नई शुरूआत,
स्नेह, सम्मान और समर्पण के साथ

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811
पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801
श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी
मो. 09422939767
परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343
नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375
मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708
भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233
जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449
हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो. 09720890047
हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो. 09927001112
गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो. 08791269705

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
.....
श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161

गोवा

श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस मो. 07023101169
मथुरा मो. 07023101163
अलीगढ़ मो. 07023101169

छत्तीसगढ़

रायपुर मो. 07869916950,
08306004806

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद मो. 07073474435
लोनी मो. 9257110802
आगरा मो. 07023101174

गुजरात

राजकोट मो. 09529920083

राजस्थान

जयपुर
मो. 09928027946, 09257110807

मध्य प्रदेश

इन्दौर मो. 09529920087

दिल्ली

फतेहपुरी
मो. 08588835711, 07073452155
शाहदरा मो. 07073474435

हरियाणा

अम्बाला मो. 07023101160
कैथल मो. 08696002432

तेलंगाना

हैदराबाद मो. 09573938038

उत्तराखण्ड

देहरादून मो. 07023101175

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई मो. 09529920090,
07073452174 09529920088
पूणे मो. 09529920093

दिल्ली

रोहिणी
मो. 08588835718 08588835719
जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101167, 07412060406
विकासपुरी, नई दिल्ली
मो. 09257017592

हरियाणा

गुरूग्राम मो. 08306004802,
हिसार मो. 9257017593
रेवाड़ी मो. 9257017594
फरीदाबाद मो. 7023101162

गुजरात

सूरत मो. 09529920082
वडोदरा मो. 09529920081
अहमदाबाद
मो. 09529920080, 08306008208

उत्तर प्रदेश

मेरठ मो. 07073474438
लखनऊ मो. 09351230395

(कर्नाटक)

बेंगलुरू मो. 09341200200

राजस्थान

जोधपुर मो. 08306004821
कोटा मो. 07023101172
अजमेर मो. नं. 9216022978

बिहार

पटना मो. 09257110805

पंजाब

लुधियाना मो. 07023101153
चण्डीगढ़ मो. 07073452176

वेस्ट बंगाल

कोलकाता मो. 09529920097

मध्य प्रदेश

ग्वालियर मो. 9216022976

उत्तराखंड

हरिद्वार मो.9229920089

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	18,05,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,44,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,83,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,22,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)

दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001
फोन नं. 0294-6622222

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

Narayan Children Academy

Unit of Narayan Seva Sansthan

सपनों को मिली नई उड़ान

शिक्षा, संस्कार और आत्मविश्वास के संग बच्चे गढ़ रहे हैं अपना सुनहरा भविष्य। सही मार्गदर्शन और बेहतर अवसरों से हर बच्चा अपने सपनों को नई दिशा दे रहा है।



Donate via UPI

narayanseva@sbi

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 नवम्बर, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये